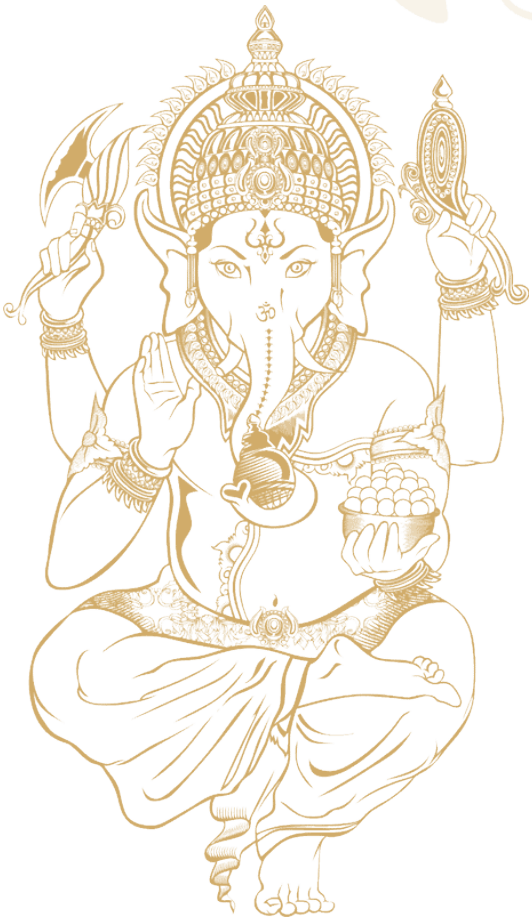

Mr. Archana Tiwari

02 Oct 1993

08:00 PM

Ayodhya

Model: Web-MyKundli

Order No: 120445701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**02/10/1993**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**20:00:00 घंटे**
इष्ट	35:14:31 घटी
स्थान	**Ayodhya**
राज्य	Uttar Pradesh
देश	India

अक्षांश	26:47:00 उत्तर
रेखांश	82:12:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:01:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	19:58:48 घंटे
वेलान्तर	00:10:35 घंटे
साम्पातिक काल	20:44:04 घंटे
सूर्योदय	05:54:11 घंटे
सूर्यास्त	17:46:38 घंटे
दिनमान	11:52:27 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	15:38:04 कन्या
लग्न के अंश	29:24:03 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मेष - मंगल
राशि-स्वामी	**मेष - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**अश्विनी - 2**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	व्याघात
करण	गर
गण	देव
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	सिंह
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	चे-चेतना
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1915	आश्विन	10
पंजाबी	संवत : 2050	आश्विन	17
बंगाली	सन् : 1400	आश्विन	16
तमिल	संवत : 2050	पुरुटासी	16
केरल	कोल्लम : 1169	कन्नी	16
नेपाली	संवत : 2050	आश्विन	17
चैत्रादि	संवत : 2050	आश्विन	कृष्ण 2
कार्तिकादि	संवत : 2050	भाद्रपद	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 2
तिथि समाप्ति काल _____: 29:23:16
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 09:06:58 घंटे
जन्म योग _____: अश्विनी
सूर्योदय कालीन योग ____: व्याघात
योग समाप्ति काल _____: 24:20:18 घंटे
जन्म योग _____: व्याघात
सूर्योदय कालीन करण ____: तैतिल
करण समाप्ति काल _____: 16:09:20 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 27:12:35
भभोग _____: 67:24:36
भोग्य दशा काल _____: केतु 4 वर्ष 2 मा 3 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मृग
लग्न _____: मेष
सूर्य _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगल _____: सिंह
बुध _____: वृष
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

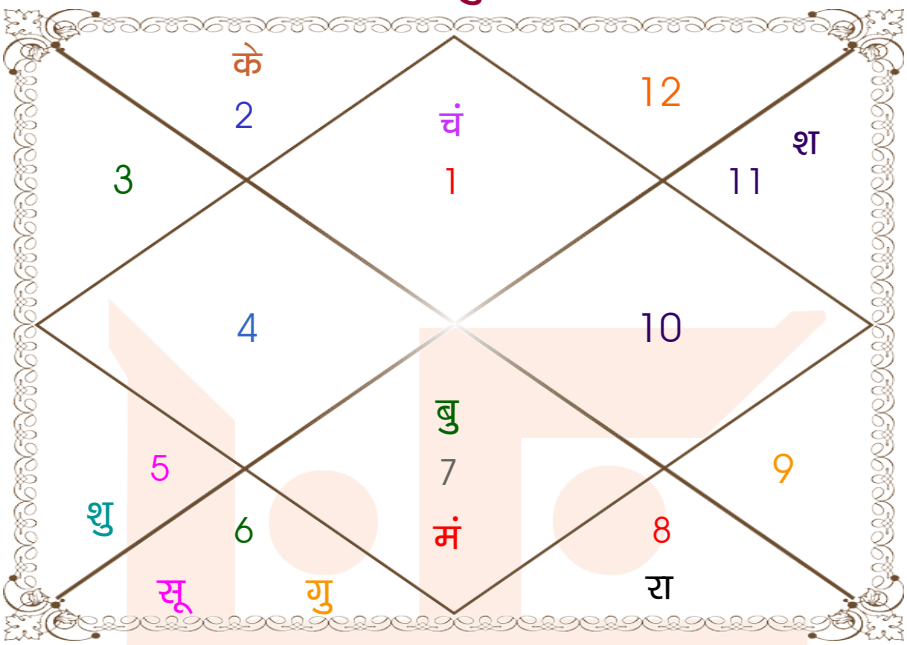

चन्द्र कुंडली

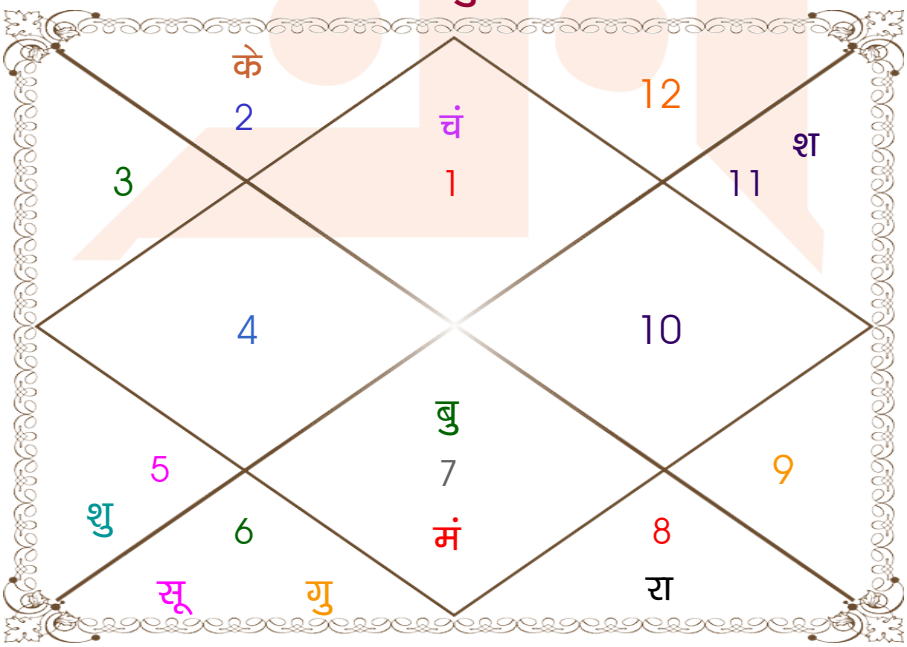

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

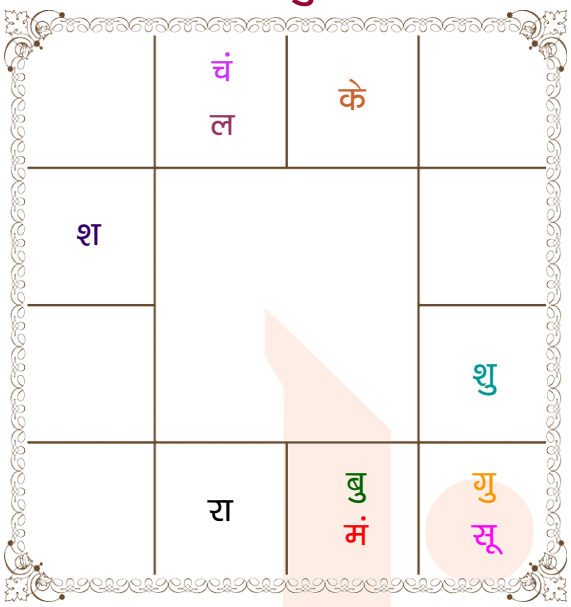

लग्न कुंडली

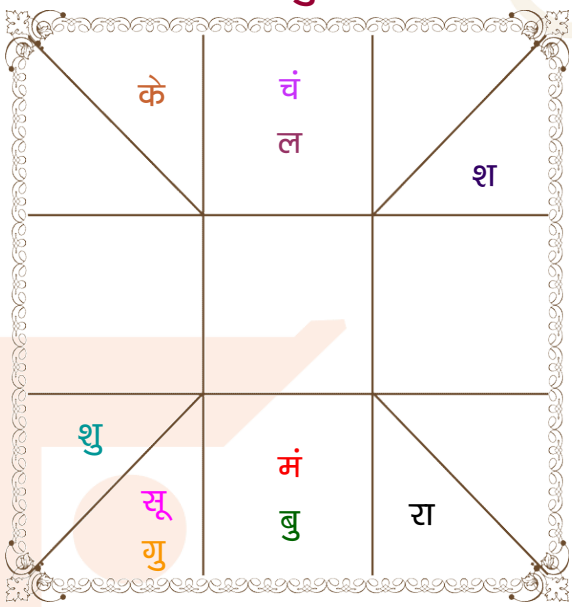

विंशोत्तरी
केतु 4वर्ष 2मा 3दि

केतु

02/10/1993

07/12/2110

केतु	06/12/1997
शुक्र	06/12/2017
सूर्य	07/12/2023
चन्द्र	06/12/2033
मंगल	06/12/2040
राहु	06/12/2058
गुरु	06/12/2074
शनि	06/12/2093
बुध	07/12/2110

योगिनी
भ्रामरी 2वर्ष 4मा 19दि

धान्या

20/02/2025

21/02/2028

धान्या	23/05/2025
भ्रामरी	22/09/2025
भद्रिका	21/02/2026
उल्का	22/08/2026
सिद्धा	23/03/2027
संकटा	22/11/2027
मंगला	22/12/2027
पिंगला	21/02/2028

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	29:24:03	410:46:06	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	राहु	---
सूर्य			कन्या	15:38:04	00:59:02	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	सम राशि
चंद्र			मेष	05:22:35	11:51:43	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	मंगल	सम राशि
मंगल			तुला	09:57:19	00:40:46	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	सम राशि
बुध			तुला	08:15:37	01:19:42	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	मित्र राशि
गुरु			कन्या	27:51:19	00:12:52	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			सिंह	19:41:04	01:13:41	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	शत्रु राशि
शनि	व		कुंभ	00:24:09	00:02:28	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	मूलत्रिकोण
राहु	व		वृश्चि	10:29:58	00:06:34	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	सूर्य	शत्रु राशि
केतु	व		वृष	10:29:58	00:06:34	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	चंद्र	सम राशि
हर्ष			धनु	24:27:54	00:00:16	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
नेप			धनु	24:36:13	00:00:05	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
प्लूटो			तुला	29:56:46	00:01:51	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	चंद्र	---
दशम भाव			मक	14:49:01	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:46:26

लग्न-चलित

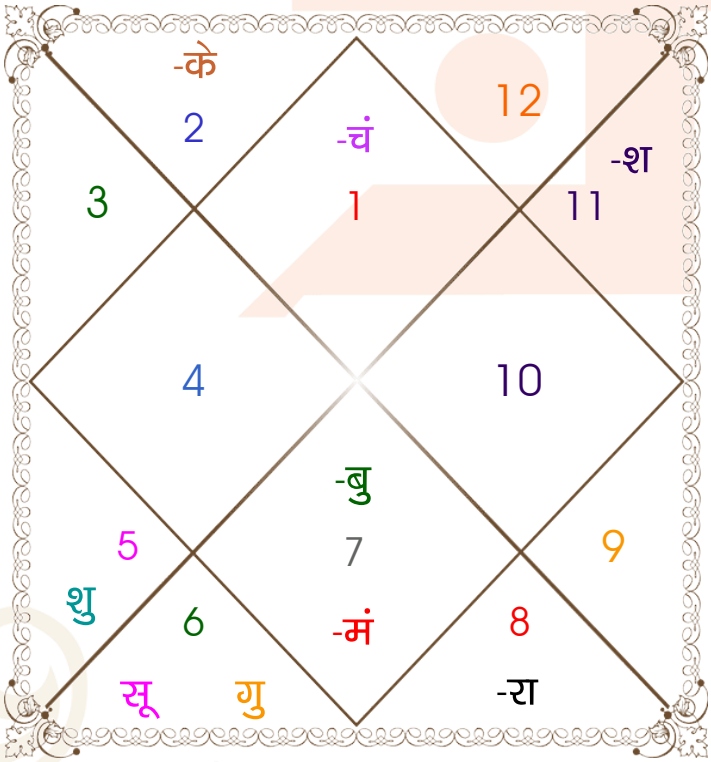

चन्द्र कुंडली

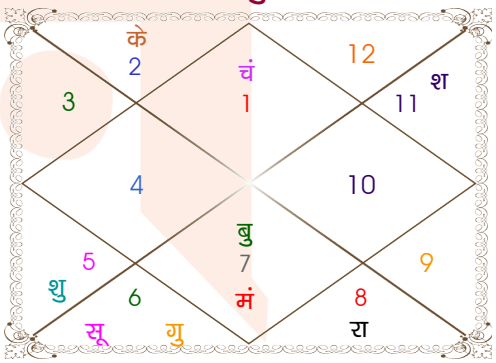

नवमांश कुंडली

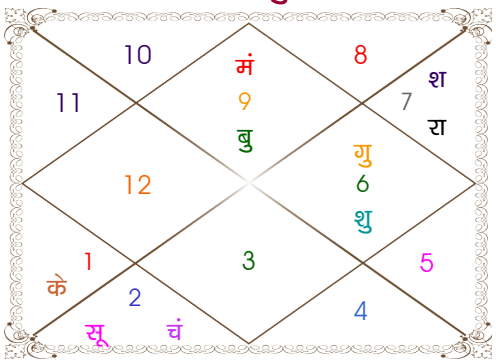

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी

श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)

7906311562 , 7388947439

Ujjwalkrishna7388@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	11:58:13	मेष	29:24:03
2	वृष	11:58:13	वृष	24:32:23
3	मिथुन	07:06:32	मिथुन	19:40:42
4	कर्क	02:14:51	कर्क	14:49:01
5	सिंह	02:14:51	सिंह	19:40:42
6	कन्या	07:06:32	कन्या	24:32:23
7	तुला	11:58:13	तुला	29:24:03
8	वृश्चिक	11:58:13	वृश्चिक	24:32:23
9	धनु	07:06:32	धनु	19:40:42
10	मकर	02:14:51	मकर	14:49:01
11	कुम्भ	02:14:51	कुम्भ	19:40:42
12	मीन	07:06:32	मीन	24:32:23

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	29:24:03
2	वृष	26:23:20
3	मिथुन	20:06:59
4	कर्क	14:49:01
5	सिंह	14:06:49
6	कन्या	20:13:25
7	तुला	29:24:03
8	वृश्चिक	26:23:20
9	धनु	20:06:59
10	मकर	14:49:01
11	कुम्भ	14:06:49
12	मीन	20:13:25

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली

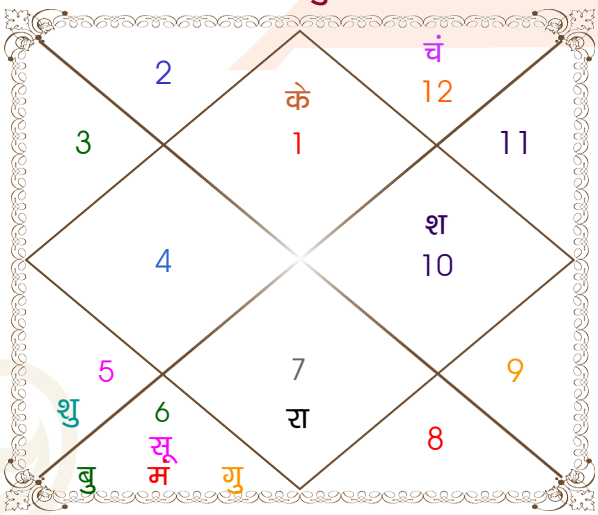

भाव कुंडली

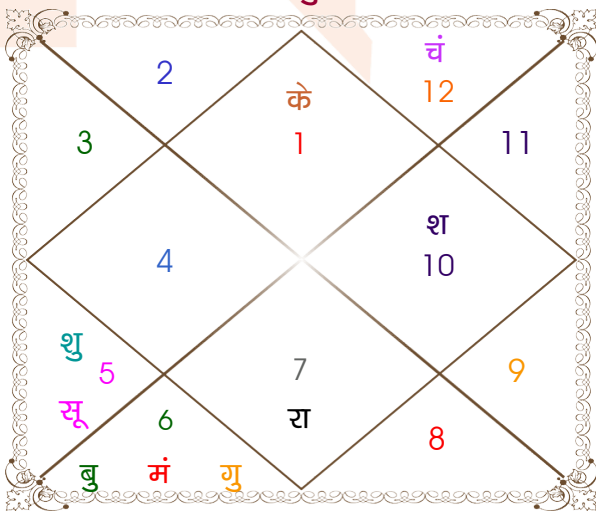

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 4 वर्ष 2 मास 3 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
02/10/1993		06/12/1997		06/12/2017		07/12/2023		06/12/2033	
06/12/1997		06/12/2017		07/12/2023		06/12/2033		06/12/2040	
	00/00/0000	शुक्र	07/04/2001	सूर्य	26/03/2018	चंद्र	06/10/2024	मंगल	04/05/2034
	00/00/0000	सूर्य	07/04/2002	चंद्र	24/09/2018	मंगल	07/05/2025	राहु	23/05/2035
	00/00/0000	चंद्र	07/12/2003	मंगल	30/01/2019	राहु	06/11/2026	गुरु	28/04/2036
	02/10/1993	मंगल	05/02/2005	राहु	25/12/2019	गुरु	07/03/2028	शनि	07/06/2037
मंगल	06/11/1993	राहु	06/02/2008	गुरु	12/10/2020	शनि	06/10/2029	बुध	04/06/2038
राहु	24/11/1994	गुरु	07/10/2010	शनि	24/09/2021	बुध	08/03/2031	केतु	31/10/2038
गुरु	31/10/1995	शनि	06/12/2013	बुध	01/08/2022	केतु	07/10/2031	शुक्र	31/12/2039
शनि	09/12/1996	बुध	06/10/2016	केतु	06/12/2022	शुक्र	07/06/2033	सूर्य	07/05/2040
बुध	06/12/1997	केतु	06/12/2017	शुक्र	07/12/2023	सूर्य	06/12/2033	चंद्र	06/12/2040

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
06/12/2040		06/12/2058		06/12/2074		06/12/2093		07/12/2110	
06/12/2058		06/12/2074		06/12/2093		07/12/2110		00/00/0000	
राहु	19/08/2043	गुरु	24/01/2061	शनि	09/12/2077	बुध	04/05/2096	केतु	06/05/2111
गुरु	12/01/2046	शनि	07/08/2063	बुध	18/08/2080	केतु	01/05/2097	शुक्र	05/07/2112
शनि	18/11/2048	बुध	12/11/2065	केतु	27/09/2081	शुक्र	02/03/2100	सूर्य	09/11/2112
बुध	07/06/2051	केतु	19/10/2066	शुक्र	27/11/2084	सूर्य	06/01/2101	चंद्र	11/06/2113
केतु	25/06/2052	शुक्र	19/06/2069	सूर्य	09/11/2085	चंद्र	08/06/2102	मंगल	03/10/2113
शुक्र	25/06/2055	सूर्य	07/04/2070	चंद्र	10/06/2087	मंगल	05/06/2103		00/00/0000
सूर्य	19/05/2056	चंद्र	07/08/2071	मंगल	19/07/2088	राहु	22/12/2105		00/00/0000
चंद्र	18/11/2057	मंगल	13/07/2072	राहु	26/05/2091	गुरु	29/03/2108		00/00/0000
मंगल	06/12/2058	राहु	06/12/2074	गुरु	06/12/2093	शनि	07/12/2110		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 4 वर्ष 2 मा 3 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
07/05/2025		06/11/2026		07/03/2028		06/10/2029		08/03/2031	
06/11/2026		07/03/2028		06/10/2029		08/03/2031		07/10/2031	
राहु	28/07/2025	गुरु	10/01/2027	शनि	07/06/2028	बुध	19/12/2029	केतु	20/03/2031
गुरु	09/10/2025	शनि	28/03/2027	बुध	27/08/2028	केतु	18/01/2030	शुक्र	25/04/2031
शनि	04/01/2026	बुध	05/06/2027	केतु	30/09/2028	शुक्र	14/04/2030	सूर्य	05/05/2031
बुध	23/03/2026	केतु	03/07/2027	शुक्र	05/01/2029	सूर्य	10/05/2030	चंद्र	23/05/2031
केतु	24/04/2026	शुक्र	23/09/2027	सूर्य	02/02/2029	चंद्र	22/06/2030	मंगल	04/06/2031
शुक्र	24/07/2026	सूर्य	17/10/2027	चंद्र	23/03/2029	मंगल	22/07/2030	राहु	06/07/2031
सूर्य	20/08/2026	चंद्र	26/11/2027	मंगल	25/04/2029	राहु	08/10/2030	गुरु	04/08/2031
चंद्र	05/10/2026	मंगल	25/12/2027	राहु	21/07/2029	गुरु	16/12/2030	शनि	07/09/2031
मंगल	06/11/2026	राहु	07/03/2028	गुरु	06/10/2029	शनि	08/03/2031	बुध	07/10/2031

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
07/10/2031		07/06/2033		06/12/2033		04/05/2034		23/05/2035	
07/06/2033		06/12/2033		04/05/2034		23/05/2035		28/04/2036	
शुक्र	16/01/2032	सूर्य	16/06/2033	मंगल	15/12/2033	राहु	01/07/2034	गुरु	07/07/2035
सूर्य	16/02/2032	चंद्र	01/07/2033	राहु	06/01/2034	गुरु	21/08/2034	शनि	30/08/2035
चंद्र	06/04/2032	मंगल	12/07/2033	गुरु	26/01/2034	शनि	21/10/2034	बुध	18/10/2035
मंगल	12/05/2032	राहु	08/08/2033	शनि	19/02/2034	बुध	14/12/2034	केतु	06/11/2035
राहु	11/08/2032	गुरु	01/09/2033	बुध	12/03/2034	केतु	05/01/2035	शुक्र	02/01/2036
गुरु	31/10/2032	शनि	30/09/2033	केतु	21/03/2034	शुक्र	10/03/2035	सूर्य	19/01/2036
शनि	05/02/2033	बुध	26/10/2033	शुक्र	14/04/2034	सूर्य	29/03/2035	चंद्र	17/02/2036
बुध	02/05/2033	केतु	06/11/2033	सूर्य	22/04/2034	चंद्र	30/04/2035	मंगल	08/03/2036
केतु	07/06/2033	शुक्र	06/12/2033	चंद्र	04/05/2034	मंगल	23/05/2035	राहु	28/04/2036

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
28/04/2036		07/06/2037		04/06/2038		31/10/2038		31/12/2039	
07/06/2037		04/06/2038		31/10/2038		31/12/2039		07/05/2040	
शनि	01/07/2036	बुध	28/07/2037	केतु	12/06/2038	शुक्र	10/01/2039	सूर्य	06/01/2040
बुध	27/08/2036	केतु	18/08/2037	शुक्र	07/07/2038	सूर्य	31/01/2039	चंद्र	17/01/2040
केतु	20/09/2036	शुक्र	17/10/2037	सूर्य	15/07/2038	चंद्र	08/03/2039	मंगल	24/01/2040
शुक्र	26/11/2036	सूर्य	04/11/2037	चंद्र	27/07/2038	मंगल	02/04/2039	राहु	13/02/2040
सूर्य	16/12/2036	चंद्र	05/12/2037	मंगल	05/08/2038	राहु	04/06/2039	गुरु	01/03/2040
चंद्र	19/01/2037	मंगल	26/12/2037	राहु	27/08/2038	गुरु	31/07/2039	शनि	21/03/2040
मंगल	12/02/2037	राहु	18/02/2038	गुरु	16/09/2038	शनि	07/10/2039	बुध	08/04/2040
राहु	14/04/2037	गुरु	07/04/2038	शनि	10/10/2038	बुध	06/12/2039	केतु	16/04/2040
गुरु	07/06/2037	शनि	04/06/2038	बुध	31/10/2038	केतु	31/12/2039	शुक्र	07/05/2040

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	78%	स्वास्थ्य, सुख
लहसुनिया	केतु	73%	धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	71%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	64%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	59%	दम्पति, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
हीरा	शुक्र	55%	सन्तति सुख, धन, दम्पति
पुखराज	गुरु	53%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय, कम खर्च
पन्ना	बुध	28%	दाम्पत्य कष्ट, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
गोमेद	राहु	16%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट

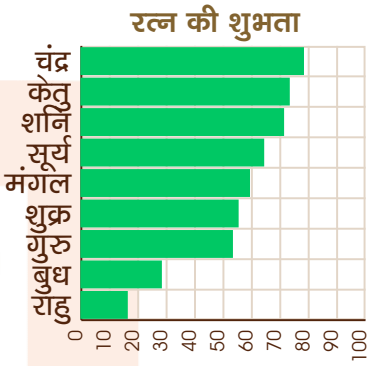

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	06/12/1997	52%	66%	66%	28%	53%	61%	58%	0%	86%
शुक्र	06/12/2017	52%	66%	59%	41%	53%	67%	77%	28%	80%
सूर्य	07/12/2023	77%	84%	66%	28%	59%	34%	58%	0%	61%
चंद्र	06/12/2033	70%	91%	59%	41%	53%	55%	71%	0%	61%
मंगल	06/12/2040	70%	84%	72%	3%	59%	55%	71%	0%	80%
राहु	06/12/2058	52%	66%	44%	28%	53%	61%	77%	41%	61%
गुरु	06/12/2074	70%	84%	66%	3%	66%	34%	71%	16%	73%
शनि	06/12/2093	52%	66%	44%	41%	53%	61%	83%	28%	61%
बुध	07/12/2110	70%	66%	59%	52%	53%	61%	71%	16%	73%

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	कम खर्च
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सुख हानि
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपके पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अन्त में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्य दोषों से आपको परेशानी हो सकती है । दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगी तथा समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा तथा यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जतक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरू, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्,

लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(07/12/2023 - 06/12/2033)

आपकी कुण्डली में चन्द्र की महादशा 07/12/2023 को आरम्भ तथा 06/12/2033 समाप्त होगी। इसकी अवधि दस वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र प्रथम भाव में अवस्थित है और आपके लग्न को बल प्रदान कर रहा है। यह आपकी शारीरिक संरचना, गठन, जीवन-शक्ति, ऊर्जस्विता, समृद्धि लम्बी आयु आदि का प्रतिनिधित्व करता है। संक्षेप में दस वर्ष की इस अवधि में आपको संतोष के साथ-साथ शांति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी समृद्धि अत्यंत सुदृढ़ होगी। यह अवधि गतिविधि से परिपूर्ण होगी।

स्वास्थ्य :

चन्द्र लग्न में अवस्थित है जो केन्द्र और त्रिकोण दोनों है। यह स्थिति सुखी और स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करती है। इस दशा में कोई घातक रोग अथवा दुर्घटना नहीं होगी। आप स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करेंगे और अपने दैनिक कार्यों का उपयुक्त ढंग से सम्पादन करने में समर्थ होंगे। आप सुन्दर हैं और अत्यन्त भावुक, कुतूहली, व्यग्र तथा बेचैन हैं।

धन सम्पत्ति :

आपका मस्तिष्क तथा बुद्धि अधिक धनोपार्जन की दिशा में प्रवृत्त हैं क्योंकि दशेश चन्द्र मस्तिष्क का कारक है। आप अपनी धन-सम्पत्ति की वृद्धि करेंगे। आपके बैंक बैलेन्स तथा अन्य सम्पत्तियों में वृद्धि की सम्भावना भी है।

व्यवसाय :

चन्द्र दशा के दौरान आप अपनी स्थिति तथा कार्य से संतुष्ट होंगे। यदि आप सेवारत हैं तो आपकी उन्नति के आसार हैं और व्यवसायी हैं तो व्यवसाय के विस्तार तथा नये कार्य के संकेत हैं। आपके मस्तिष्क में नये रचनात्मक विचार उभरेंगे जिनकी आपके सहकर्मी तथा उच्चाधिकारी सराहना करेंगे। चन्द्र दशा के कारण आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी और न्यायप्रियता तथा उच्चे आचरण के लिए आप प्रसिद्ध होंगे। आप ऐसे व्यवसाय का चयन भी करेंगे जिसमें उतार-चढ़ाव हो। आप अधिकार के इच्छुक होंगे। आप एक सतर्क व्यक्ति हैं।

पारिवारिक जीवन :

सप्तम भाव, जो साझेदारी का भाव है, पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण इस काल में आपकी साझेदारी और पारिवारिक जीवन उत्तम होंगे।

आपके जीवनसाथी पूर्ण सहयोगी और सुन्दर होंगे। आपकी माता भी पारिवारिक जीवन में आपकी सहायता करेंगी और आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे। आपके पिता भी आपके व्यवसाय में आपकी सहायता कर आपको आत्म विश्वासी बनाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

तीस वर्ष की आयु के बाद आपका झुकाव उच्च शिक्षा की ओर होगा और आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुचि होगी।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(06/10/2024 - 07/05/2025)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 07/12/2023 को प्रारंभ होकर 06/12/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 06/10/2024 को प्रारंभ होकर 07/05/2025 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमें, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सप्तम में स्थित होकर मंगल कुंडली के 10, 1, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

मंगल की अंतर्दशा में आप विपरीत लिंग के व्यक्तियों पर आसक्त रहेंगे। वाणी में कटुता, चालाकी और दरिद्रता का योग है जिससे विवाहित जीवन कष्टप्रद हो सकता है। क्योंकि आप मंगली हैं, अगर जीवनसाथी मंगली नहीं हैं तो उनका देहांत हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन भौमगायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में जाएं।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(07/05/2025 - 06/11/2026)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 07/12/2023 को प्रारंभ हुई और 06/12/2033 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 07/05/2025 को प्रारंभ होकर 06/11/2026 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आपको बहुत सावधान रहना चाहिए क्योंकि समाज में अपमान हो सकता है। कोई व्याधि हो सकती है। झगड़े विवाद से बचें। समय कठिन हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के गायत्री मंत्र का जाप करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(06/11/2026 - 07/03/2028)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 07/12/2023 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 06/11/2026 को प्रारंभ होकर 07/03/2028 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। बृहस्पति शुभग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 10, 12 और 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप सुस्त, भाग्यहीन और भीरु हो सकते हैं। स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा मगर आप उत्साहहीन हो सकते हैं; शत्रुओं से भयभीत रहेंगे। प्रत्येक कदम बढ़ाने में सावधानी आवश्यक है क्योंकि लोगों के आपके प्रति विश्वास में कमी आ सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के जाप करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(07/03/2028 - 06/10/2029)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 07/12/2023 को प्रारंभ हुई और 06/12/2033 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 07/03/2028 को प्रारंभ होकर 06/10/2029 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के लग्न, 5 और 8 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आपके बहुत से कर्मचारी और मातहत होंगे। मित्रों की संख्या कम होगी। आय संभवतः सरकारी माध्यम से होगी। राजनीति में सफलता और सम्मान प्राप्त हो सकते हैं। जीवन स्वस्थ, प्रसन्नतायुक्त और दीर्घायु होगा। शनि शक्तिशाली ग्रह है और जातक के धैर्य और कर्मठता की परीक्षा लेता है। भाग्योदय में देर हो सकती है मगर होता जरुर है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें :

1. नदी, तालाब, घर के मछलीघर आदि की मछलियों को आटे की गोलियां दें।
2. भोजन का पहला कौर गाय को दें।
3. पीपल को जल दें।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

अंर्तदशा :– चन्द्र – बुध
(06/10/2029 - 08/03/2031)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 07/12/2023 को प्रारंभ हुई थी और 06/12/2033 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 06/10/2029 को प्रारंभ होकर 08/03/2031 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमें, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर बुध लग्न पर दृष्टिपात कर रहा है और अपने प्रभाव को लग्न के कार्यो पर डाल रहा है।

इस अवधि में आप गुणवान और दयालु होंगे। वेषभूषा आकर्षक रहेगी। विधि और व्यापार के ज्ञान में वृद्धि संभव है। कार्यक्षमता बढ़ेगी और सफलता सरलता से प्राप्त होगी।

ज्ञान, विज्ञान, गणित, ज्योतिष, खगोलशास्त्र आदि में आपकी रुचि रहेगी। धार्मिकता बढ़ेगी। स्वास्थ्य और शारीरिक बल उत्तम रहेंगे। ज्ञान का दुरुपयोग करने से बचें।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।